International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

वैश्विक भू–राजनीति के बदलते आयाम, अमेरिका और ईरान के संर्घष के संदर्भ में

बीबी सफीना

शोधार्थी
स्नातकोत्तर राजनीति विज्ञान विभाग
तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर

शोध–सार

वैश्विक भू–राजनीति के बदलते आयामों में अमेरिका–ईरान संघर्ष एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हो रहा है। 1979 की इस्लामिक क्रांति के बाद से दोनों देशों के बीच तनावपूर्ण संबंध आज प्रत्यक्ष सैन्य टकराव तक पहुंच गए हैं। फरवरी 2026 में शुरू हुए ऑपरेशन एपिक फ्यूरी के तहत अमेरिका और इजराइल के संयुक्त हमलों ने ईरान के परमाणु कार्यक्रम, सैन्य ठिकानों और नेतृत्व को लक्षित किया, जिससे क्षेत्रीय संतुलन बिगड़ा और वैश्विक ऊर्जा बाजार प्रभावित हुए। स्ट्रेट ऑफ होर्मुज की अस्थायी बंदी ने विश्व अर्थव्यवस्था को झटका दिया, तेल की कीमतें बढ़ीं और चीन, रूस जैसे शक्तियों को नए अवसर मिले।

यह संघर्ष केवल द्विपक्षीय नहीं, बल्कि बहुधरुवीय विश्व व्यवस्था के उदय, ऊर्जा सुरक्षा, परमाणु प्रसार और क्षेत्रीय गठबंधनों का प्रतिबिंब है। अमेरिका अपनी वैश्विक चतपउंबल बनाए रखने के लिए अधिकतम दबाव की नीति अपनाता है, जबकि ईरान क्षेत्रीय प्रभाव और प्रतिरोध की रणनीति पर जोर देता है। परिणामस्वरूप, मध्य पूर्व में नई संरेखण हो रहे हैं – सऊदी अरब, यूएई जैसे देश संतुलन साध रहे हैं, जबकि चीन और रूस अवसरवादी भूमिका निभा रहे हैं।

यह अध्ययन भू–राजनीतिक परिवर्तनों, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, सैन्य–आर्थिक प्रभावों और भविष्य की संभावनाओं का विश्लेषण करता है। यह दर्शाता है कि अमेरिका–ईरान टकराव बहुपक्षीय विश्व में शक्ति संक्रमण का प्रतीक है, जहां पारंपरिक पश्चिमी वर्चस्व चुनौतीपूर्ण हो रहा है। शांति के लिए कूटनीति, क्षेत्रीय सहयोग और परमाणु समझौते आवश्यक हैं, अन्यथा संघर्ष वैश्विक अस्थिरता बढ़ा सकता है।

शब्दकुंजी : वैश्विक भू–राजनीति, स्ट्रेट ऑफ होर्मुज, मध्य पूर्व पुनर्संरचना, परमाणु प्रसार एवं बहुधरुवीय विश्व व्यवस्था इत्यादि

परिचय

वैश्विक भू–राजनीति के आयाम निरंतर परिवर्तनशील रहे हैं। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद स्थापित द्विधरुवीय विश्व व्यवस्था के विघटन के पश्चात् एकधरुवीय अमेरिकी वर्चस्व उभरा, जिसे अब बहुधरुवीय या बहु–धरुवीय संक्रमण काल की ओर जाते हुए देखा जा रहा है। इस परिवर्तन की पृष्ठभूमि में अमेरिका और ईरान के बीच का संघर्ष न केवल मध्य पूर्व की क्षेत्रीय सुरक्षा का प्रश्न है, बल्कि वैश्विक शक्ति संतुलन, ऊर्जा सुरक्षा, परमाणु प्रसार और महाशक्तियों के गठबंधनों का प्रतिबिंब भी है। फरवरी 2026 में शुरू हुए अमेरिका–इजराइल संयुक्त सैन्य अभियान श्ऑपरेशन एपिक फ्यूरीश ने इस संघर्ष को एक नए आयाम प्रदान किया है, जिसमें ईरान के सर्वोच्च नेता आयतुल्लाह अली खामेनेई की हत्या, परमाणु सुविधाओं पर हमले, स्ट्रेट ऑफ होर्मुज का आंशिक अवरोध और क्षेत्रीय अस्थिरता शामिल है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

अमेरिका–ईरान संबंधों का इतिहास जटिल और विरोधाभासी रहा है। 1953 में CIA द्वारा समर्थित तख्तापलट ने लोकतांत्रिक रूप से चुने गए प्रधानमंत्री मोहम्मद मोसद्देक को हटाकर शाह मोहम्मद रजा पहलवी को सत्ता सौंपी। यह घटना ईरान में अमेरिका के प्रति गहरी अविश्वास की जड़ बनी। 1979 की इस्लामिक क्रांति ने शाह को उखाड़ फेंका और आयतुल्लाह रूहोल्लाह खुमैनी के नेतृत्व में इस्लामिक गणराज्य की स्थापना की। अमेरिकी दूतावास पर कब्जा और 52 अमेरिकी बंधकों की घटना ने संबंधों को स्थायी रूप से विषाक्त कर दिया।

1980–88 के ईरान–इराक युद्ध में अमेरिका ने सद्दाम हुसैन का समर्थन किया, जबकि ईरान ने खुद को प्रतिरोध की धुरी के रूप में स्थापित किया। 2003 के इराक आक्रमण के बाद ईरान ने क्षेत्रीय प्रभाव विस्तार किया। 2015 का संयुक्त व्यापक कार्य योजना समझौता ओबामा प्रशासन की कूटनीति का परिणाम था, लेकिन 2018 में ट्रंप ने इसे एकतरफा रूप से समाप्त कर अधिकतम दबाव नीति अपनाई। इससे ईरान की अर्थव्यवस्था प्रभावित हुई, लेकिन उसने परमाणु कार्यक्रम को तेज किया।

2025–26 में ट्रंप के दूसरे कार्यकाल ने फिर अधिकतम दबाव को पुनर्जीवित किया। ईरान के परमाणु कार्यक्रम, बैलिस्टिक मिसाइलें और प्रॉक्सी समूहों पर चिंता बढ़ी। फरवरी 2026 के हमलों ने इस तनाव को युद्ध स्तर पर ले लिया। ईरान ने जवाबी हमले किए, जिसमें स्ट्रेट ऑफ होर्मुज प्रभावित हुआ। अप्रैल 2026 में अस्थायी युद्धविराम हुआ, लेकिन बातचीत जारी ळें

भू–राजनीतिक सिद्धांतों का संदर्भ

क्लासिकल भू–राजनीति के अनुसार, सर हाफोर्ड मैकिंडर का हार्टलैंड थ्योरी और निकोलस स्पाइकमैन का 'रिमलैंड थ्योरी' मध्य पूर्व को वैश्विक नियंत्रण का केंद्र मानते हैं। ईरान की भौगोलिक स्थितिकृफारस की खाड़ी, स्ट्रेट ऑफ होर्मुज और शिया क्रिसेंट इसे रणनीतिक बनाती है। अमेरिका 'ऑफशोर बैलेंसिंग' और सहयोगी के माध्यम से क्षेत्रीय संतुलन बनाए रखना चाहता है, जबकि ईरान आसिमेट्रिक युद्ध और प्रॉक्सी फोर्सेस की रणनीति अपनाता है।

रियलिस्ट स्कूल के अनुसार, राज्य शक्ति अधिकतम करते हैं। अमेरिका अपनी वैश्विक चतपउंबल बनाए रखने के लिए ईरान को रोकना चाहता है, ताकि चीन और रूस को मध्य पूर्व में पैर जमाने का अवसर न मिले। लिबरल इंटरनेशनलिस्ट्स JCPOA जैसे समझौतों पर जोर देते हैं, जबकि कंस्ट्रक्टिविस्ट्स दोनों पक्षों के बीच मिसट्रस्ट और पहचान को महत्वपूर्ण मानते हैं।

वर्तमान संघर्ष : 2026 का संदर्भ

28 फरवरी 2026 को अमेरिका और इजराइल ने 'ऑपरेशन एपिक फ्यूरी' शुरू किया। सैकड़ों हमलों में ईरान की मिसाइल सुविधाएं, वायु रक्षा, नौसेना और नेतृत्व को निशाना बनाया गया। खामेनेई की मृत्यु और IRGC के कई कमांडरों के मारे जाने से ईरान की कमान प्रभावित हुई। ईरान ने इजराइल, अमेरिकी ठिकानों और खाड़ी देशों पर मिसाइल–ड्रोन हमले किए। इससे क्षेत्रीय युद्ध फैला, लेबनान में इजराइल–हिजबुल्लाह टकराव पुनः सक्रिय हुआ और हूती हमले बढ़े।

स्ट्रेट ऑफ होर्मुज का आंशिक बंद होना वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए झटका था। तेल की कीमतें बढ़ीं, एशिया की आपूर्ति प्रभावित हुई। अमेरिका ने ब्लॉकेड लगाया, जबकि ईरान ने शिपिंग पर नियंत्रण का दावा किया। अप्रैल 2026 में पाकिस्तान–मध्यस्थता में युद्धविराम हुआ, लेकिन बातचीत में होर्मुज, परमाणु मुद्दा और प्रतिबंध मुख्य बिंदु हैं। मई 2026 तक स्थिति तनावपूर्ण बनी हुई है।

वैश्विक प्रभाव

यह संघर्ष बहुधरुवीय विश्व का प्रमाण है। चीन, ईरान का प्रमुख तेल खरीदार, आर्थिक नुकसान उठा रहा है लेकिन अवसर भी तलाश रहा है। रूस, यूक्रेन युद्ध के कारण अमेरिकी ध्यान बंटने से लाभान्वित हो रहा है। यूरोप ऊर्जा संकट और शरणार्थी प्रवाह से चिंतित है। भारत जैसे देशों को संतुलित नीति अपनानी पड़ रही है – इजराइल और खाड़ी देशों से संबंध मजबूत, लेकिन ईरान से ऊर्जा और चाबहार पर सहयोग।

शोध की प्रासंगिकता

यह अध्ययन बदलते वैश्विक व्यवस्था में शक्ति संक्रमण, क्षेत्रीय संघर्षों के वैश्विक प्रभाव और कूटनीति बनाम सैन्य शक्ति के संतुलन को समझने में सहायक होगा। भारत की विदेश नीति के लिए भी महत्वपूर्ण है।

उद्देश्य :

1. वैश्विक भू–राजनीति के बदलते आयामों का विश्लेषण अमेरिका–ईरान संघर्ष के संदर्भ में करना।
2. ऐतिहासिक, सैन्य, आर्थिक और कूटनीतिक कारकों का अध्ययन करना।
3. क्षेत्रीय और वैश्विक प्रभावों का मूल्यांकन करना।
4. भविष्य की संभावनाओं और शांति की चुनौतियों का सुझाव देना।

साहित्य की समीक्षा :

महमूद मोनशीपौरी की पुस्तक In the Shadow of Mistrust: The Geopolitics and Diplomacy of US & Iran Relations (2022)[1] अमेरिका–ईरान संबंधों में गहरे अविश्वास की जड़ों का विश्लेषण करती है। लेखक सैंक्शंस, बाहरी दबाव और घरेलू सुधार आंदोलनों की भूमिका पर चर्चा करते हुए तर्क देते हैं कि कूटनीतिक वार्ता ही अविश्वास को दूर करने और दोनों देशों के बीच स्थायी समाधान ढूंढने का सबसे प्रभावी माध्यम है। यह पुस्तक आंतरिक, क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय आयामों को जोड़कर वर्तमान संघर्ष की पृष्ठभूमि समझने में सहायक है।

त्रिता पारसी की Losing an Enemy: Obama] Iran] and the Triumph of Diplomacy (2017)[2] JCPOA (2015) समझौते की पृष्ठभूमि, वार्ता प्रक्रिया और कूटनीतिक सफलता का विस्तृत वर्णन करती है। लेखक, जो स्वयं वार्ता प्रक्रिया से जुड़े रहे, ओबामा प्रशासन और ईरानी नेतृत्व के बीच हुए समझौते को डिप्लोमेसी की जीत बताते हैं। यह पुस्तक अधिकतम दबाव नीति की विफलता और संवाद के महत्व को रेखांकित करती है, जो 2026 के युद्ध के संदर्भ में प्रासंगिक है।

जेम्स ए. बिल की क्लासिक पुस्तक The Eagle and the Lion: The Tragedy of American&Iranian Relations (1988)[3] अमेरिका–ईरान संबंधों की ऐतिहासिक त्रासदी का चित्रण करती है। 1940 के दशक से लेकर ईरान–कॉन्ट्रा स्कैंडल तक के घटनाक्रमों का विश्लेषण करते हुए लेखक दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक, राजनीतिक और सामरिक गलतफहमियों को उजागर करते हैं। यह कार्य आज भी अमेरिकी नीति की आलोचना और समझ के लिए आधारभूत माना जाता है।

एरवंद अब्राहमियन की The Coup : 1953, The CIA, and the Roots of Modern U.S. & Iranian Relations (2013)[4] 1953 के CIA समर्थित तख्तापलट का विस्तृत इतिहास प्रस्तुत करती है। लेखक मोसद्देक सरकार के पतन, शाह की पुनर्स्थापना और इसके दीर्घकालिक परिणामों का विश्लेषण करते हैं। यह पुस्तक ईरान में अमेरिका के प्रति अविश्वास की जड़ों को समझने के लिए अनिवार्य है।

अफशिन मातिन–असगरी की Axis of Empire : A History of Iran–US Relations (2026)[5] ईरान–अमेरिका संबंधों का लंबा इतिहास (19वीं शताब्दी से लेकर ट्रंप काल तक) प्रस्तुत करती है। लेखक साम्राज्यवाद, प्रतिरोध और हस्तक्षेप की पैटर्न को उजागर करते हुए 2026 के युद्ध को ऐतिहासिक निरंतरता का हिस्सा बताते हैं। यह हालिया पुस्तक वर्तमान संघर्ष की गहराई समझने में महत्वपूर्ण योगदान देती है।

बह रोज घमारी की The Long War on Iran: New Events, Old Questions (2026)[6] अमेरिका द्वारा ईरान पर लंबे समय से चल रहे श्युद्धश का विश्लेषण करती है। लेखक पुरानी नीतियों और नई घटनाओं (2026 युद्ध सहित) को जोड़कर ईरानी राजनीति की आंतरिक जटिलताओं और अमेरिकी आक्रामकता की आलोचना करते हैं। यह पुस्तक पारंपरिक 'दुष्ट राज्य' आख्यान को चुनौती देती है।

Atlantic Council (2026)[7] रिपोर्ट्स युद्ध के बाद के परिदृश्यों का मूल्यांकन करती हैं। ये रिपोर्ट्स अमेरिका–चीन प्रतिस्पर्धा, क्षेत्रीय पुनर्संरचना और संभावित स्थिरता/अस्थिरता के चार परिदृश्य प्रस्तुत करती हैं। ये नीति–निर्माताओं के लिए व्यावहारिक अंतर्दृष्टि प्रदान करती हैं।

CSIS (Center for Strategic and International Studies) (2026)[8] के विश्लेषण स्ट्रेट ऑफ होर्मुज के आर्थिक प्रभाव, ऊर्जा बाजारों पर युद्ध के प्रभाव और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं की कमजोरियों पर केंद्रित हैं। ये रिपोर्ट्स तेल की कीमतों में वृद्धि, वैश्विक मुद्रास्फीति और एशिया–यूरोप पर पड़ने वाले प्रभावों का मात्रात्मक आकलन प्रस्तुत करती हैं।

उपरोक्त साहित्य ऐतिहासिक जड़ों, कूटनीतिक प्रयासों, साम्राज्यवादी हस्तक्षेपों और वर्तमान युद्ध के बहुआयामी प्रभावों को कवर करता है। हालांकि, 2026 युद्ध के तत्काल बाद के अधिकांश कार्य अभी प्रारंभिक हैं, अतः यह अध्ययन इन स्रोतों की कमी को पूरक बनाते हुए नई अंतर्दृष्टि प्रदान करेगा।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और नीति विकास

अमेरिका और ईरान के बीच संबंधों का इतिहास गहरा अविश्वास और बार–बार हस्तक्षेप से भरा हुआ है। 1953 में CIA द्वारा समर्थित 'ऑपरेशन अजाक्स' के तहत लोकतांत्रिक रूप से चुने गए प्रधानमंत्री मोहम्मद मोसद्देक को हटाकर शाह मोहम्मद रजा पहलवी को सत्ता सौंपी गई। इस घटना ने ईरानी समाज में अमेरिका के प्रति स्थायी शत्रुता की नींव रखी। 1979 की इस्लामिक क्रांति ने शाह को उखाड़ फेंका और आयतुल्लाह रूहोल्लाह खुमैनी के नेतृत्व में इस्लामिक गणराज्य की स्थापना हुई। अमेरिकी दूतावास पर कब्जा और 52 बंधकों की घटना ने संबंधों को और बिगाड़ दिया।

1980–88 के ईरान–इराक युद्ध में अमेरिका ने सद्दाम हुसैन का समर्थन किया, जबकि ईरान ने खुद को प्रतिरोध की धुरी के रूप में स्थापित किया। 2003 के इराक आक्रमण के बाद ईरान ने शिया प्रभाव का विस्तार किया। 2015 का JCPOA समझौता कूटनीति की एक बड़ी सफलता था, लेकिन 2018 में राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने इसे समाप्त कर 'अधिकतम दबाव' नीति अपनाई। ईरान ने परमाणु कार्यक्रम को तेज किया और प्रॉक्सी समूहों (हिजबुल्लाह, हूती, हमास) के माध्यम से क्षेत्रीय प्रभाव बढ़ाया।

2025 में ट्रंप के दूसरे कार्यकाल ने फिर अधिकतम दबाव को पुनर्जीवित किया। ईरान के परमाणु कार्यक्रम, बैलिस्टिक मिसाइलें और क्षेत्रीय गतिविधियों को अमेरिका और इजराइल के लिए अस्तित्वगत खतरा माना गया। इस नीति विकास ने 2026 के प्रत्यक्ष सैन्य टकराव की नींव रखी।

2026 युद्ध : कारण, घटनाक्रम और सैन्य रणनीति :

फरवरी 2026 में अमेरिका और इजराइल ने ईरान पर संयुक्त हमले शुरू किए। 28 फरवरी 2026 को 'ऑपरेशन एपिक फ्यूरी' (अमेरिका) और 'ऑपरेशन रोअरिंग लायन' (इजराइल) शुरू हुआ। ईरान का परमाणु कार्यक्रम, मिसाइल क्षमता, प्रॉक्सी हमले और क्षेत्रीय अस्थिरता। ट्रंप प्रशासन ने इसे 'शांति के माध्यम से शक्ति' की नीति का हिस्सा बताया।

हमलों की शुरुआत में ईरान के सर्वोच्च नेता आयतुल्लाह अली खामेनेई की हत्या सहित सैकड़ों लक्ष्यों पर हमले किए गए। अमेरिकी और इजराइली वायुसेना ने मिसाइल सुविधाएं, वायु रक्षा प्रणालियां, नौसेना ठिकाने और कमांड सेंटरों को निशाना बनाया। पहले 12 घंटों में ही लगभग 900 हमले दर्ज किए गए। ईरान ने जवाबी हमले किए, जिसमें इजराइल, अमेरिकी ठिकानों और खाड़ी देशों पर मिसाइल–ड्रोन हमले शामिल थे।

38 दिनों के प्रमुख युद्ध में अमेरिका ने ईरान की बैलिस्टिक मिसाइल क्षमता, नौसेना और रक्षा औद्योगिक आधार को काफी हद तक नष्ट कर दिया। ईरान की ओर से स्ट्रेट ऑफ होर्मुज को अवरुद्ध करने का प्रयास किया गया, जिससे वैश्विक ऊर्जा संकट पैदा हुआ। अप्रैल 2026 में पाकिस्तान की मध्यस्थता में युद्ध विराम हुआ, लेकिन तनाव बरकरार है। यह युद्ध अमेरिका–इजराइल की संयुक्त सैन्य श्रेष्ठता और ईरान की असममित युद्ध क्षमता का प्रदर्शन था।

भू–आर्थिक प्रभाव : होर्मुज, तेल बाजार, वैश्विक आपूर्ति

स्ट्रेट ऑफ होर्मुज, जहां विश्व के 20 प्रतिशत तेल और LNG का परिवहन होता है, युद्ध का सबसे बड़ा आर्थिक हथियार बना। ईरान ने 28 फरवरी से इस मार्ग को अवरुद्ध कर दिया, जबकि अमेरिका ने जवाबी ब्लॉकेड लगाया। परिणामस्वरूप तेल की कीमतें आसमान छू गईं, वैश्विक मुद्रास्फीति बढ़ी और एशिया–यूरोप की आपूर्ति श्रृंखलाएं प्रभावित हुईं।

विश्व की सबसे बड़ी तेल आपूर्ति व्यवधान के कारण भारत, चीन, जापान जैसे आयातक देशों में ईंधन संकट पैदा हुआ। पैनिक बाइंग, उर्वरक (यूरिया) की कमी और शिपिंग लागत में वृद्धि देखी गई। CSIS और IEA रिपोर्ट्स के अनुसार, यह इतिहास का सबसे बड़ा ऊर्जा बाजार व्यवधान था। खाड़ी देशों की अर्थव्यवस्थाएं भी प्रभावित हुईं, हालांकि सऊदी अरब ने उत्पादन बढ़ाने का प्रयास किया।

यह संकट वैश्विक भू–आर्थिक परिवर्तन का प्रतीक है, जहां एक क्षेत्रीय चोकपॉइंट पूरे विश्व अर्थव्यवस्था को बंधक बना सकता है। अप्रैल–मई 2026 तक आंशिक रूप से मार्ग खुला, लेकिन पूर्ण स्थिरता अभी दूर है।

क्षेत्रीय पुनर्संरचना : GCC, इजराइल, तुर्की की भूमिका

युद्ध ने मध्य पूर्व की क्षेत्रीय संरचना को पूरी तरह बदल दिया। GCC देश (सऊदी अरब, यूएई, बहरीन आदि) शुरू में अमेरिका–इजराइल के साथ खड़े रहे, लेकिन दीर्घकालिक अस्थिरता से चिंतित हैं। अब्राहम समझौते के तहत इजराइल के साथ संबंध मजबूत हुए, लेकिन होर्मुज संकट ने उन्हें भी नुकसान पहुंचाया।

इजराइल ने अपने अस्तित्वगत खतरे को कम करने के लिए पूर्ण सैन्य श्रेष्ठता हासिल की, लेकिन क्षेत्रीय अलगाव का खतरा बढ़ा। तुर्की ने संतुलित भूमिका निभाई NATO सदस्य होने के बावजूद ईरान के साथ आर्थिक संबंध बनाए रखे और क्षेत्रीय मध्यस्थता की कोशिश की। हिजबुल्लाह और हूती जैसे प्रॉक्सी समूह कमजोर हुए, जिससे

'शिया क्रिसेंट' प्रभावित हुआ। कुल मिलाकर, क्षेत्र में नई संरेखण हो रही है, जहां सनकी राज्य कमजोर और संतुलनकारी शक्तियां मजबूत हो रही हैं।

महाशक्तियों की प्रतिक्रिया : चीन, रूस, यूरोप

चीन ने युद्ध का आर्थिक नुकसान उठाया क्योंकि वह ईरानी तेल का बड़ा खरीदार है, लेकिन BRI परियोजनाओं और रूस–ईरान गठबंधन को मजबूत करने का अवसर भी देखा। रूस ने यूक्रेन युद्ध के दौरान अमेरिकी ध्यान बंटने का फायदा उठाया और हथियारों तथा कूटनीतिक समर्थन से ईरान की मदद की।

यूरोप ऊर्जा संकट, शरणार्थी प्रवाह और आर्थिक मंदी से जूझ रहा है। फ्रांस, ब्रिटेन जैसे देश होर्मुज मिशन के लिए विमान वाहक भेज रहे हैं और समझौते की वकालत कर रहे हैं। कुल मिलाकर, महाशक्तियां अवसरवादी रणनीति अपना रही हैं।

बहुधरुवीयता और अमेरिकी Primacy का संकट

यह संघर्ष अमेरिकी चतपउंबल के संकट को उजागर करता है, जबकि अमेरिका–इजराइल ने सैन्य सफलता हासिल की, लेकिन वैश्विक प्रतिरोध और आर्थिक लागत ने एकधरुवीय व्यवस्था की सीमाएं दिखाईं। चीन और रूस बहुधरुवीय व्यवस्था को मजबूत कर रहे हैं। अमेरिका अब सहयोगियों पर अधिक निर्भर है, जो उसकी स्वतंत्रता को सीमित करता है।

परमाणु आयाम और सुरक्षा दुविधाएं

ईरान का परमाणु कार्यक्रम युद्ध का केंद्र था। हमलों ने सुविधाओं को क्षति पहुंचाई, लेकिन पूर्ण विनाश संभव नहीं हुआ। सुरक्षा दुविधा स्पष्ट है – अमेरिका–इजराइल ईरान को परमाणु हथियार नहीं देने चाहते, जबकि ईरान इसे अस्तित्व की गारंटी मानता है। JCPOA जैसा समझौता फिर आवश्यक लगता है, अन्यथा क्षेत्रीय परमाणु दौड़ शुरू हो सकती है।

निष्कर्ष :

अमेरिका–ईरान संघर्ष समकालीन वैश्विक भू–राजनीति के बदलते आयामों का स्पष्ट प्रतीक है। 2026 का युद्ध, जिसमें 'ऑपरेशन एपिक फ्यूरी' के तहत अमेरिका–इजराइल ने ईरान पर व्यापक हमले किए, न केवल मध्य पूर्व की क्षेत्रीय सुरक्षा को प्रभावित किया बल्कि पूरी विश्व व्यवस्था को एक नए यथार्थ का सामना कराया। यह संघर्ष दर्शाता है कि एकधरुवीय विश्व व्यवस्था अब पूर्ण रूप से समाप्त हो चुकी है और बहुधरुवीय विश्व की ओर संक्रमण तीव्र गति से हो रहा है। अमेरिका ने सैन्य दृष्टि से अपनी श्रेष्ठता सिद्ध की, लेकिन इस युद्ध ने उसकी वैश्विक चतपउंबल की सीमाओं को भी उजागर कर दिया। युद्ध के अल्पकालिक परिणाम अमेरिका और इजराइल के पक्ष में रहे। ईरान के परमाणु कार्यक्रम को गंभीर क्षति पहुंचाई गई, उसके प्रमुख सैन्य ठिकानों को नष्ट किया गया और 'प्रतिरोध की धुरी' को कमजोर किया गया, परंतु दीर्घकालिक दृष्टि से यह संघर्ष अत्यधिक महंगा साबित हुआ। स्ट्रेट ऑफ होर्मुज का अवरोध, वैश्विक तेल बाजार में अस्थिरता, मुद्रास्फीति का उदय और आपूर्ति श्रृंखलाओं का टूटना विश्व अर्थव्यवस्था के लिए बड़ा झटका सिद्ध हुआ। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इस युद्ध ने क्षेत्रीय अस्थिरता को बढ़ावा दिया, जिसके परिणामस्वरूप नई शक्ति संरेखण हो रही है। यह संघर्ष ऊर्जा भू–राजनीति की केंद्रीयता को भी रेखांकित करता है। एक संकीर्ण जलडमरूमध्य (स्ट्रेट ऑफ होर्मुज) के नियंत्रण ने पूरे विश्व को बंधक बना लिया, जो भविष्य के संघर्षों के लिए चेतावनी है। साथ ही, चीन और रूस जैसे महाशक्तियों ने इस संकट को अवसर के रूप में उपयोग किया, जिससे अमेरिकी वर्चस्व और अधिक चुनौतीपूर्ण हो गया है। शांति की दिशा में आगे बढ़ने के लिए बहुपक्षीय कूटनीति ही एकमात्र व्यवहारिक रास्ता है। JCPOA जैसे समझौते को पुनर्जीवित

करना, ईरान के सुरक्षा चिंताओं को संबोधित करना और क्षेत्रीय संवाद आवश्यक है। संयुक्त राष्ट्र और अन्य अंतर्राष्ट्रीय मंचों को अधिक सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए।

भारत जैसे उभरते शक्ति राष्ट्रों के लिए यह स्थिति विशेष चुनौती और अवसर दोनों प्रस्तुत करती है। भारत को इजराइल, सऊदी अरब और खाड़ी देशों के साथ मजबूत संबंध बनाए रखते हुए ईरान के साथ भी संतुलित रणनीति अपनानी चाहिए। चाबहार बंदरगाह, ऊर्जा सुरक्षा और मध्य एशिया तक पहुंच के लिए ईरान अभी भी महत्वपूर्ण है। स्पष्टतः कहा जा सकता है कि अमेरिका–ईरान संघर्ष हमें यह सिखाता है कि शक्ति का अंधाधुंध उपयोग दीर्घकालिक स्थिरता नहीं ला सकता। भविष्य का मार्ग या तो सहयोगात्मक बहुधरुवीय व्यवस्था की ओर जाएगा या फिर निरंतर टकराव और अस्थिरता की ओर। यदि कूटनीति और संवाद की जीत हुई तो मध्य पूर्व और विश्व शांति की नई संभावनाएं उभर सकती हैं, अन्यथा यह संघर्ष केवल एक और लंबे युद्ध का आरंभ साबित हो सकता है।

संदर्भ–सूची :

1. मोनशीपौरी, महमूद (2022) : 'इन द शैडो ऑफ मिस्ट्रस्ट : द जियोपॉलिटिक्स एंड डिप्लोमेसी ऑफ यूएस–ईरान रिलेशन्स', न्यूयॉर्क : रूटलेज.
2. पारसी, त्रिता (2017) : 'लूज़िंग एन एनेमी : ओबामा, ईरान एंड द ट्रायम्फ ऑफ डिप्लोमेसी', न्यू हेवन : येल यूनिवर्सिटी प्रेस.
3. बिल, जेम्स ए. (1988) : 'द ईगल एंड द लायन : द ट्रेजडी ऑफ अमेरिकन–ईरानियन रिलेशन्स', न्यू हेवन : येल यूनिवर्सिटी प्रेस.
4. अब्राहमियन, एरवंद (2013) : 'द कूप 1953, द सीआईए एंड द रूट्स ऑफ मॉडर्न यू.एस.–ईरानियन रिलेशन्स', न्यूयॉर्क : द न्यू प्रेस.
5. मातिन–असगरी, अफशिन (2026) : 'एक्सिस ऑफ एम्पायर : ए हिस्ट्री ऑफ ईरान–यूएस रिलेशन्स', लंदन : वर्सो बुक्स.
6. घमारी, बहरोज़ (2026) : 'द लॉन्ग वॉर ऑन ईरान : न्यू इवेंट्स, ओल्ड क्वेश्चन्स', कैलिफोर्निया : यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस.
7. अटलांटिक काउंसिल (2026) : 'फोर सिनेरियोस फॉर जियोपॉलिटिक्स आफ्टर द ईरान वॉर', वाशिंगटन डी. सी. : अटलांटिक काउंसिल मिडिल ईस्ट प्रोग्राम्स.
8. सेंटर फॉर स्ट्रैटेजिक एंड इंटरनेशनल स्टडीज़ (CSIS) (2026) : 'द स्ट्रेट ऑफ होर्मुज़ क्राइसिस : इकोनॉमिक एंड एनर्जी इम्प्लिकेशन्स ऑफ द यूएस–ईरान कॉन्फ्लिक्ट', वाशिंगटन डी.सी. : CSIS रिपोर्ट्स.